

अनृणी वि. (तत्.) [अन्+ऋणी] दे. अनृण।

अनृत वि. (तत्.) [अन्+ऋत] जो ऋत या सत्य न हो, असत्य, मिथ्या, झूठ।

अनृतवादी वि. (तत्.) [अनृत+वादी] सत्य न बोलने वाला, मिथ्याभाषी, झूठ बोलने वाला।

अनृतु स्त्री. (तत्.) [अन्+ऋतु] 1. ऋतु के विपरीत 2. अनुकूल ऋतु का अभाव, अकाल, असमय 3. वह कन्या जिसका अभी तक रजोधर्म प्रारंभ न हुआ हो वि. जो ऋतु (मौसम) के अनुसार न हो, जो बिना ऋतु के हो अथवा जो उपयुक्त ऋतु के अभाव में हों।

अनेक वि. (तत्.) एक से अधिक, बहुत, असंख्य, अनगिनत।

अनेक चित्त वि. (तत्.) 1. जिसका चित्त स्थिर न हो 2. जिसमें एकाग्रचित्तता न हो, चंचल मन।

अनेकता स्त्री. (तत्.) दे. अनेकत्व।

अनेकत्र क्रि.वि. (तत्.) अनेक/कई जगह जैसे- वर्षा से आज नगर में अनेकत्र जल भर गया।

अनेकत्व पुं. (तत्.) 1. अनेकता, एक से अधिक होने का भाव 2. अनैक्य, एक न होने का भाव।

अनेकधा क्रि.वि. (तत्.) विविध प्रकार से जैसे- शास्त्रों में अनेकधा सृष्टि विवेचन है।

अनेकमुख वि. (तत्.) 1. जिसके अनेक मुख हों (ब्रह्मा, शिव, रावण आदि) 2. अनेक प्रकार की बात करने वाला, बहुमुख 3. बहुत बोलने वाला, बहुजल्पी 4. विविध प्रकार के सिद्धांत वाला।

अनेकरूप वि. (तत्.) 1. बहुत रूपों वाला 2. बहुरूपी, परिवर्तनशील पुं. (तत्.) परमेश्वर।

अनेकविध वि. (तत्.) [अनेक-विध] 1. बहुत प्रकार का, बहुविध 2. कई तरह के जैसे- अनेकविध कार्यक्रम, अनेकविध चर्चा।

अनेकशः क्रि.वि. (तत्.) 1. बहुत बार, कई प्रकार से जैसे- 1. उसने अनेकशः तीर्थाटन किया 2.

ब्रह्म की सत्ता का अनेकशः विवेचन किया गया।

अनेकांगी पुं. (तत्.) [अनेक+अंगी] 1. अनेक अंगों वाला जैसे- जीव अनेकांगी है 2. विविध भागों, खंडों वाला, वेद के अनेकांगी माना गया है। व्याकरण उसका मुख है।

अनेकांत वि. (तत्.) 1. जहाँ एकांत न हो 2. जिसका अंत या परिणाम एक न हो, अनिश्चित अस्थिर।

अनेकांतवाद पुं. (तत्.) जैन दर्शन में स्यादवाद।

अनेकांतवादी वि. (तत्.) दर्शन [अनेकांत+वादी] 1. अनेकांतवाद के सिद्धांत का समर्थक या अनुयायी 2. जैनदर्शन के सिद्धांत 'स्यादवाद' (सृष्टि-ऐसा है, वैसा है) को मानने वाला टि. एक पदार्थ में परस्पर विरुद्ध अनेक धर्मों की स्थितिका निश्चय करने की क्रिया अनेकांतवाद है।

अनेकाकार वि. (तत्.) अनेक आकारवाला, अनेक आकृतियों वाला, बहुरूप।

अनेकाकी वि. (तत्.) [अन्+एकाकी] 1. जो अकेला न हो 2. जिसके साथ किसी क्रिया में/व्यवहार में एक से अधिक लोग हों जैसे- अनेकाकी गमन करने वाला।

अनेकाग्र वि. (तत्.) [अन्+एकाग्र] 1. जो किसी कार्य में एकाग्र न हो 2. जिसकी एकाग्रता एक कार्य पर न होकर अनेक कार्यों पर हो 3. विविध मानसिक वृत्ति वाला।

अनेकात्मक वि. (तत्.) [अनेक+आत्मक] 1. जो किसी प्रकार से एकात्मक (किसी के साथ मिलकर एकरूप) न हुआ हो 2. विविध रूप वाला, अनेक रूप

अनेकात्मकता स्त्री. (तत्.) [अनेक+आत्मकता] अनेक रूपों का भाव या अवस्था, अनेकरूपता, बहुरूपता।